Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में भारतीय इतिहास लेखन : स्रोत, पद्धति एवं समकालीन पुनर्पाठ- एक समीक्षात्मक अध्ययन

**डॉ. मधुसूदन चौबे***

* एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बडवानी (म.प्र.) भारत

**शोध सारांश –** भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं निरन्तर विकसित ज्ञान-परम्पराओं में से एक है। इस परम्परा ने केवल दर्शन, धर्म और अध्यात्म को ही नहीं, बल्कि शिक्षा, चिकित्सा, गणित, खगोल, राज्यशास्त्र, कृषि तथा इतिहास जैसे विविध ज्ञान-विषयों को भी समृद्ध किया है। भारतीय इतिहासलेखन का विकास भी इसी व्यापक ज्ञान-परम्परा की बौद्धिक पृष्ठभूमि में हुआ, जहाँ इतिहास को मात्र राजनैतिक घटनाओं के कालक्रम के रूप में न देखकर समाज की सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक निरन्तरता और नैतिक चेतना के रूप में समझा गया। औपनिवेशिक काल में भारतीय इतिहासबोध पर अनेक प्रश्न उठाए गए और यह स्थापित करने का प्रयास किया गया कि भारत में वैज्ञानिक इतिहासलेखन का अभाव था। किन्तु वैदिक साहित्य, इतिहासद्पुराण, बौद्ध एवं जैन ग्रन्थ, अभिलेख, ताम्रपत्र, मुद्राएँ, पुरातात्त्विक अवशेष तथा विदेशी यात्रियों के विवरण इस धारणा का सम्यक् परीक्षण करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में भारतीय इतिहास लेखन के स्रोतों, पद्धतियों तथा समकालीन पुनर्पाठ का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य भारतीय इतिहासलेखन की स्वदेशी अवधारणा, उसके स्रोत-वैविध्य तथा आधुनिक इतिहास-विमर्श में उसकी प्रासंगिकता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना है। शोध में गुणात्मक एवं ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है तथा साहित्यिक, अभिलेखीय और पुरातात्त्विक स्रोतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि भारतीय इतिहासलेखन को न तो केवल औपनिवेशिक प्रतिमानों के आधार पर समझा जा सकता है और न ही बिना स्रोत-समालोचना के परम्परागत आख्यानों के आधार पर। भारतीय ज्ञान परम्परा का समकालीन पुनर्पाठ तभी सार्थक होगा जब वह प्रमाण-आधारित, बहुस्रोत-आधारित और आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हो।

**शब्द कुंजी –** भारतीय ज्ञान परम्परा, इतिहासलेखन, इतिहास, स्रोत, भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारतीय इतिहास-दृष्टि।

**प्रस्तावना –** इतिहास किसी भी राष्ट्र की सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक विकास का आधार होता है। प्रत्येक सभ्यता अपने अतीत को स्मरण, संरक्षित और पुनर्व्याख्यायित करने के लिए विशिष्ट इतिहास-दृष्टि विकसित करती है। भारतीय सभ्यता भी इसका अपवाद नहीं है। भारत की इतिहास-दृष्टि उसकी व्यापक ज्ञान-परम्परा से निर्मित हुई है, जिसमें धर्म, दर्शन, साहित्य, लोकजीवन, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा प्रकृति सभी को एक समन्वित दृष्टि से देखा गया है। इस कारण भारतीय इतिहासलेखन को केवल घटनाओं के कालक्रम के रूप में नहीं, बल्कि सभ्यतागत अनुभव की सतत अभिव्यक्ति के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

भारतीय परम्परा में इतिहास शब्द का उल्लेख वैदिक एवं उत्तरवैदिक साहित्य में मिलता है।छान्दोग्य उपनिषद में इतिहास-पुराणको ज्ञान की महत्वपूर्ण विधा माना गया है।महाभारत तथा रामायण को स्वयं इतिहास कहा गया है, जबकि पुराणों में वंशावलियों, राजाओं, भूगोल तथा सामाजिक जीवन का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसी प्रकार बौद्ध एवं जैन साहित्य, शिलालेख, ताम्रपत्र, मुद्राएँ तथा पुरातात्त्विक साक्ष्य भारतीय अतीत के पुनर्निर्माण के लिए बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध कराते हैं। अत: यह धारणा कि भारत में इतिहास बोध का अभाव था, आज पुनर्विचार की अपेक्षा रखती है।

औपनिवेशिक काल में भारतीय इतिहास लेखन का अध्ययन मुख्यत: यूरोपीय इतिहास-दृष्टि से किया गया। अनेक औपनिवेशिक इतिहासकारों ने भारतीय परम्परागत स्रोतों को मिथकीय अथवा अविश्वसनीय मानकर उनका सीमित उपयोग किया। इसके विपरीत स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्रवादी, सामाजिक-आर्थिक, सबाल्टर्न तथा उत्तर-औपनिवेशिक इतिहासकारों ने भारतीय स्रोतों और इतिहास-दृष्टि का पुनर्मूल्यांकन किया। वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर बढ़ते शैक्षणिक विमर्श ने इस बहस को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन, संरक्षण और उच्च शिक्षा में उसके समावेशन पर विशेष बल दिया है। इसके परिणामस्वरूप इतिहासलेखन के क्षेत्र में भी यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो गया है कि भारतीय स्रोतों और ज्ञान-परम्पराओं को आधुनिक इतिहास-अनुसंधान की पद्धतियों के साथ किस प्रकार समन्वित किया जाए। यह शोध-पत्र इसी प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है।

**साहित्य समीक्षा**

भारतीय इतिहास लेखन पर अनेक विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से विचार प्रस्तुत किए हैं। औपनिवेशिक इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को मुख्यत: राजनीतिक घटनाओं और राजवंशों के आधार पर व्यवस्थित करने का प्रयास किया, जबकि स्वतंत्रता के बाद भारतीय विद्वानों ने भारतीय स्रोतों और इतिहास-दृष्टि के पुनर्मूल्यांकन पर बल दिया।

आर. सी. मजूमदार ने भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में साहित्यिक एवं अभिलेखीय स्रोतों के समन्वित उपयोग पर बल दिया। डी. डी. कोसंबी ने सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं, पुरातत्त्व और भौतिक संस्कृति को इतिहास लेखन का आधार बनाया। रोमिला थापर ने इतिहास और परम्परा के संबंधों का आलोचनात्मक अध्ययन करते हुए यह प्रतिपादित किया कि भारतीय स्रोतों का उपयोग स्रोत-समालोचना के साथ किया जाना चाहिए। वहीं रणजीत गुहा ने इतिहास लेखन में सामान्य जन, किसान तथा वंचित वर्गों की भूमिका को केंद्र में लाने का प्रयास किया।

समकालीन शोधों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत इतिहास, दर्शन, विज्ञान तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के अंतर्विषयक अध्ययन पर विशेष बल दिया जा रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय इतिहासलेखन को अब केवल औपनिवेशिक या राष्ट्रवादी विमर्श तक सीमित नहीं रखा जा सकता, बल्कि इसे बहुआयामी स्रोतों और आधुनिक अनुसंधान-पद्धतियों के समन्वय से समझने की आवश्यकता है।

**शोध-अंतर** – भारतीय इतिहासलेखन पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, किन्तु अधिकांश अध्ययन या तो औपनिवेशिक, राष्ट्रवादी अथवा मार्क्सवादी इतिहासलेखन की व्याख्या तक सीमित हैं। दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परम्परा पर उपलब्ध अधिकांश साहित्य शिक्षा, दर्शन, योग, आयुर्वेद अथवा वैदिक विज्ञान के संदर्भ में केंद्रित है। भारतीय ज्ञान परम्परा और भारतीय इतिहासलेखन के अंतर्संबंधों का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। विशेषत: इतिहासलेखन के स्रोतों, पद्धति तथा समकालीन पुनर्पाठ को एकीकृत दृष्टि से समझने वाले अध्ययन सीमित हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी शोध-अंतर की पूर्ति का प्रयास करता है।

**शोध के उद्देश्य-** इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा एवं उसके मूल तत्त्वों का विश्लेषण करना।
2. भारतीय इतिहासलेखन के प्रमुख स्रोतों का ऐतिहासिक मूल्यांकन करना।
3. भारतीय इतिहासलेखन की पद्धति का समालोचनात्मक अध्ययन करना।
4. औपनिवेशिक, राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी तथा सबाल्टर्न इतिहासलेखन की तुलनात्मक समीक्षा करना।
5. समकालीन परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में इतिहासलेखन की संभावनाओं का विश्लेषण करना।

**शोध पद्धति** – यह अध्ययन गुणात्मक एवं ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। शोध में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक विधियों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में वैदिक साहित्य, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण, बौद्ध एवं जैन साहित्य, अभिलेख, ताम्रपत्र, मुद्राएँ तथा पुरातात्त्विक साक्ष्यों का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में इतिहासकारों की पुस्तकें, शोध-पत्र, भारतीय ज्ञान प्रणाली पर प्रकाशित अध्ययन तथा समकालीन अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया है। सभी स्रोतों का मूल्यांकन इतिहास-अनुसंधान के स्थापित सिद्धान्तों के अनुरूप स्रोत-समालोचना के आधार पर किया गया है।

**भारतीय ज्ञान परम्परा : अवधारणा एवं स्वरूप-** भारतीय ज्ञान परम्परा एक ऐसी सतत् बौद्धिक परम्परा है, जिसका विकास सहस्राब्दियों के अनुभव, चिंतन और सामाजिक व्यवहार के आधार पर हुआ है। इसका मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करना है। भारतीय परम्परा में ज्ञान को जीवनोपयोगी, नैतिक तथा लोककल्याणकारी माना गया है। इसी कारण यहाँ ज्ञान के विविध आयाम दर्शन, धर्म, चिकित्सा, कृषि, गणित, ज्योतिष, कला, साहित्य और इतिहासकृएक-दूसरे से जुड़े हुए दिखाई देते हैं।

**भारतीय इतिहासलेखन के स्रोत** – भारतीय इतिहासलेखन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी स्रोत-समृद्धि है। भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण केवल एक प्रकार के स्रोत पर आधारित नहीं है, बल्कि विभिन्न साहित्यिक, अभिलेखीय, पुरातात्त्विक तथा विदेशी स्रोतों के समन्वित अध्ययन पर आधारित है।

**(क) वैदिक साहित्य-** ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भारतीय सभ्यता के प्रारम्भिक स्रोत हैं। इनमें तत्कालीन समाज, राजनीतिक संस्थाओं, धार्मिक विश्वासों तथा आर्थिक जीवन का उल्लेख मिलता है। यद्यपि इनका उद्देश्य इतिहास-लेखन नहीं था, फिर भी इनमें उपलब्ध सूचनाएँ प्रारम्भिक भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में अत्यन्त उपयोगी हैं।

**(ख) इतिहास एवं पुराण-** रामायण और महाभारत को भारतीय परम्परा में इतिहास कहा गया है। इन ग्रन्थों में राजनीतिक घटनाओं के साथ-साथ सामाजिक संगठन, राज्यव्यवस्था, युद्धनीति, स्त्री की स्थिति, शिक्षा तथा सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तृत चित्रण प्राप्त होता है।

पुराणों में राजवंशों की वंशावलियाँ, भूगोल, धार्मिक परम्पराएँ तथा विभिन्न शासकों का उल्लेख मिलता है। यद्यपि इनमें पौराणिक तत्व भी विद्यमान हैं, फिर भी अन्य स्रोतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर इनका ऐतिहासिक महत्व स्पष्ट होता है।

**(ग) बौद्ध एवं जैन साहित्य-** पाली त्रिपिटक, जातक कथाएँ, दीपवंश, महावंश, कल्पसूत्रतथा अन्य जैन ग्रन्थ प्राचीन भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन ग्रन्थों में नगरों, व्यापार, शिक्षा, धर्म तथा राजसत्ता के विविध आयामों का उल्लेख मिलता है।

**(घ) अभिलेख एवं ताम्रपत्र-** अभिलेख भारतीय इतिहासलेखन के सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत माने जाते हैं। सम्राट अशोक के शिलालेख, प्रयाग प्रशस्ति, जूनागढ़ अभिलेख, ऐहोल अभिलेख तथा विभिन्न ताम्रपत्र तत्कालीन प्रशासन, धार्मिक नीति, भूमि व्यवस्था तथा आर्थिक जीवन की प्रमाणिक जानकारी प्रदान करते हैं।

अभिलेखों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समकालीन होते हैं तथा उनमें समय, स्थान और शासक का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इसलिए इतिहासकार उन्हें प्राथमिक स्रोत के रूप में विशेष महत्व देते हैं।

**(ङ) मुद्राएँ एवं पुरातात्त्विक साक्ष्य** – मुद्राएँ किसी भी काल की आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति का दर्पण होती हैं। शासकों के नाम, उपाधियाँ, प्रतीक तथा व्यापारिक सम्बन्धों की जानकारी इनसे प्राप्त होती है।

इसी प्रकार उत्खननों से प्राप्त नगर, भवन, स्तूप, मन्दिर, मूर्तियाँ, मृद्भाण्ड तथा अन्य अवशेष भारतीय इतिहास के वैज्ञानिक पुनर्निर्माण में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**(च) विदेशी यात्रियों के विवरण-** मेगस्थनीज, फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, अलबरूनी तथा इब्न बतूता जैसे यात्रियों ने भारत के समाज, प्रशासन, शिक्षा, धर्म और आर्थिक जीवन का प्रत्यक्ष विवरण प्रस्तुत किया। यद्यपि उनके विवरणों में व्यक्तिगत दृष्टिकोण का प्रभाव है, फिर भी भारतीय

स्रोतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर वे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होते हैं।

**भारतीय इतिहासलेखन की पद्धति रू भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में एक विश्लेषण–** इतिहास लेखन केवल अतीत की घटनाओं का कालक्रम नहीं है, बल्कि उपलब्ध स्रोतों के आधार पर अतीत का वैज्ञानिक, तर्कसंगत एवं आलोचनात्मक पुनर्निर्माण है। प्रत्येक इतिहासकार अपने समय, समाज, वैचारिक पृष्ठभूमि तथा उपलब्ध स्रोतों के आधार पर इतिहास की व्याख्या करता है। इसलिए इतिहासलेखन एक सतत् विकसित होने वाली बौद्धिक प्रक्रिया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में इतिहास का उद्देश्य केवल राजनीतिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि समाज की सांस्कृतिक स्मृति, नैतिक आदर्शों तथा सभ्यतागत निरन्तरता का संरक्षण भी था। यही कारण है कि भारतीय इतिहास लेखन में इतिहास, पुराण, वंशावली, चरित, प्रशस्ति, अभिलेख तथा लोक परम्पराएँ सभी ऐतिहासिक स्रोत के रूप में महत्त्वपूर्ण माने गए।

भारतीय इतिहास लेखन की पद्धति को समझने के लिए विभिन्न इतिहास लेखन परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।

**औपनिवेशिक इतिहास लेखन–** भारतीय इतिहास लेखन की आधुनिक शैक्षणिक संरचना का विकास औपनिवेशिक काल में हुआ। ब्रिटिश विद्वानों ने भारतीय इतिहास के अध्ययन में अभिलेखों, मुद्राओं, पुरातात्त्विक अवशेषों तथा प्राचीन ग्रन्थों का व्यवस्थित उपयोग आरम्भ किया। यह योगदान महत्वपूर्ण था, किन्तु उनकी व्याख्या प्राय: औपनिवेशिक दृष्टिकोण से प्रभावित रही।

जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास को हिन्दू, मुस्लिम और ब्रिटिश तीन कालों में विभाजित किया। यह वर्गीकरण लंबे समय तक इतिहास–लेखन में प्रभावी रहा, परन्तु बाद में इसकी आलोचना हुई क्योंकि यह भारतीय समाज की निरन्तरता और क्षेत्रीय विविधता को पर्याप्त रूप से अभिव्यक्त नहीं करता।

इसी प्रकार विंसेंट आर्थर स्मिथ ने भारतीय इतिहास को मुख्यत: राजवंशों और शासकों के आधार पर प्रस्तुत किया। औपनिवेशिक इतिहासकारों ने अनेक बार यह निष्कर्ष दिया कि भारत में वैज्ञानिक इतिहासबोध का अभाव था तथा भारतीय समाज स्थिर और परिवर्तनहीन था।

यद्यपि इस परम्परा ने स्रोत–संग्रह, अभिलेख–वाचन और पुरातत्तव के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, किन्तु इसकी व्याख्या औपनिवेशिक सत्ता की वैचारिक आवश्यकताओं से प्रभावित रही। भारतीय ज्ञान परम्परा के अनेक स्रोतों जैसे पुराण, वंशावलियाँ और लोकपरम्पराएँकृको अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया।

**राष्ट्रवादी इतिहासलेखन–** उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय विद्वानों ने औपनिवेशिक व्याख्याओं का पुनर्मूल्यांकन आरम्भ किया। इस प्रक्रिया से राष्ट्रवादी इतिहासलेखन का विकास हुआ, जिसका उद्देश्य भारतीय इतिहास की गौरवपूर्ण परम्पराओं और सांस्कृतिक निरन्तरता को रेखांकित करना था।

आर. सी. मजूमदार, जदुनाथ सरकार तथा के. पी. जायसवाल जैसे इतिहासकारों ने भारतीय स्रोतों के आधार पर प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास का पुनर्लेखन किया।

राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की प्रमुख विशेषताएँ थीं–

1. भारतीय सांस्कृतिक एकता पर बल।
2. भारतीय स्रोतों की पुनर्प्रतिष्ठा।
3. राष्ट्रीय चेतना का विकास।
4. औपनिवेशिक पूर्वाग्रहों की आलोचना।

हालाँकि कुछ विद्वानों ने यह भी इंगित किया कि इस धारा में कई बार राष्ट्रीय गौरव की भावना के कारण कुछ ऐतिहासिक निष्कर्ष अपेक्षाकृत आदर्शवादी हो गए। फिर भी इस परम्परा का सबसे बड़ा योगदान भारतीय इतिहास को भारतीय दृष्टि से समझने का प्रयास था।

**भारतीय ज्ञान परम्परा और समकालीन पुनर्पाठ–** इक्कीसवीं शताब्दी में भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनर्पाठ ने इतिहासलेखन को नई दिशा प्रदान की है। इसका उद्देश्य किसी विशेष विचारधारा को स्थापित करना नहीं, बल्कि भारतीय स्रोतों, परम्पराओं और ज्ञान–प्रणालियों का आधुनिक अनुसंधान–पद्धतियों के साथ समन्वित अध्ययन करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पश्चात भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत पाण्डुलिपियों, क्षेत्रीय इतिहास, लोकपरम्पराओं, अभिलेखों तथा पुरातात्त्विक साक्ष्यों के वैज्ञानिक अध्ययन पर विशेष बल दिया गया है। इस दृष्टिकोण में यह स्वीकार किया जाता है कि भारतीय इतिहासलेखन की विश्वसनीयता तभी बढ़ेगी जब पारम्परिक स्रोतों का उपयोग आधुनिक स्रोत–समालोचना, पुरातत्तव, भाषाविज्ञान, पुरालिपिविज्ञान तथा वैज्ञानिक तिथिकरण जैसी विधियों के साथ किया जाए।

**समालोचनात्मक विश्लेषण–** उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय इतिहासलेखन किसी एक विचारधारा का परिणाम नहीं है, बल्कि विभिन्न बौद्धिक परम्पराओं के सतत् संवाद का प्रतिफल है। औपनिवेशिक इतिहासलेखन ने स्रोत–संग्रह और वैज्ञानिक पद्धति की नींव रखी, राष्ट्रवादी इतिहासलेखन ने भारतीय दृष्टिकोण को पुनर्स्थापित किया, मार्क्सवादी इतिहासलेखन ने सामाजिक एवं आर्थिक आयामों को प्रमुखता दी और सबाल्टर्न इतिहासलेखन ने इतिहास में उपेक्षित वर्गों की भूमिका को सामने लाया।

भारतीय ज्ञान परम्परा का समकालीन पुनर्पाठ इन सभी दृष्टिकोणों के उपयोगी पक्षों को स्वीकार करते हुए इतिहासलेखन की एक संतुलित एवं बहुआयामी पद्धति का समर्थन करता है। यह दृष्टिकोण न तो परम्परागत स्रोतों को बिना परीक्षण के स्वीकार करता है और न ही उन्हें मिथकीय कहकर अस्वीकार करता है। इसके विपरीत यह साहित्य, अभिलेख, पुरातत्तव, लोकपरम्पराओं तथा वैज्ञानिक साक्ष्यों के समन्वित उपयोग पर बल देता है।

**निष्कर्ष एवं सुझाव**

**निष्कर्ष –** भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में भारतीय इतिहासलेखन का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारत में इतिहासबोध का विकास अत्यन्त प्राचीन, बहुआयामी तथा निरन्तर रहा है। भारतीय परम्परा में इतिहास का उद्देश्य केवल अतीत की घटनाओं का कालानुक्रमिक विवरण प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि समाज की सांस्कृतिक स्मृति, नैतिक चेतना, राजनीतिक अनुभव और सभ्यतागत निरन्तरता का संरक्षण भी था। इसी कारण भारतीय इतिहासलेखन में वैदिक साहित्य, इतिहासद्पुराण, महाकाव्य, बौद्ध एवं जैन ग्रन्थ, अभिलेख, ताम्रपत्र, मुद्राएँ, पुरातात्त्विक अवशेष तथा लोकपरम्पराएँ सभी को ऐतिहासिक स्रोत के रूप में महत्त्व प्राप्त हुआ।

औपनिवेशिक इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास के अध्ययन को

संस्थागत रूप अवश्य दिया, किन्तु उनकी अनेक व्याख्याएँ यूरोकेन्द्रित दृष्टिकोण से प्रभावित थीं। इसके प्रतिकार में राष्ट्रवादी इतिहासलेखन ने भारतीय सांस्कृतिक निरन्तरता, राष्ट्रीय चेतना और स्वदेशी स्रोतों की महत्ता को पुनर्स्थापित किया। स्वतंत्रता के पश्चात् मार्क्सवादी इतिहासलेखन ने सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं तथा उत्पादन संबंधों के अध्ययन को प्रमुखता दी, जबकि सबाल्टर्न इतिहासलेखन ने इतिहास में उपेक्षित वर्गों की भूमिका को सामने लाकर इतिहास-अध्ययन के दायरे का विस्तार किया। इन सभी धाराओं ने भारतीय इतिहासलेखन को समृद्ध किया, यद्यपि प्रत्येक की अपनी सीमाएँ भी रहीं।

समकालीन अकादमिक विमर्श में भारतीय ज्ञान परम्परा का पुनर्पाठ इतिहासलेखन को नई दिशा प्रदान कर रहा है। यह पुनर्पाठ अतीत का महिमामण्डन नहीं, बल्कि भारतीय स्रोतों, ज्ञान-प्रणालियों और परम्पराओं का आधुनिक अनुसंधान-पद्धतियों के साथ आलोचनात्मक एवं प्रमाण-आधारित अध्ययन है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय इतिहासलेखन को समझने के लिए केवल एक विचारधारा या एक प्रकार के स्रोत पर्याप्त नहीं हैं। साहित्यिक, अभिलेखीय, पुरातात्त्विक, मौखिक तथा वैज्ञानिक साक्ष्यों के समन्वित उपयोग से ही भारतीय इतिहास का अधिक संतुलित और प्रामाणिक पुनर्निर्माण संभव है।

इस अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि भारतीय ज्ञान परम्परा आधुनिक इतिहासलेखन की प्रतिद्वन्द्वी नहीं, बल्कि उसकी पूरक है। यदि भारतीय परम्परागत स्रोतों का मूल्यांकन आधुनिक स्रोत-समालोचना, पुरालिपिविज्ञान, पुरातत्त्व, भाषाविज्ञान, भू-स्थानिक तकनीकों और डिजिटल अभिलेखागार जैसे आधुनिक उपकरणों के साथ किया जाए, तो भारतीय इतिहासलेखन अधिक वैज्ञानिक, विश्वसनीय और वैश्विक अकादमिक विमर्श में अधिक प्रभावशाली बन सकता है।

**सुझाव –** उपस्थित अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं-

1. भारतीय इतिहासलेखन के अध्ययन में भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल स्रोतों को अधिक व्यवस्थित रूप से सम्मिलित किया जाए।
2. इतिहास-अध्ययन में साहित्यिक स्रोतों के साथ अभिलेख, पुरातात्त्विक साक्ष्य तथा वैज्ञानिक परीक्षणों का समन्वित उपयोग किया जाए।
3. विश्वविद्यालयों के इतिहास पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान प्रणाली और इतिहासलेखन पर पृथक् अध्ययन इकाई विकसित की जाए।
4. प्राचीन भारतीय पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण तथा समालोचनात्मक सम्पादन प्राथमिकता के आधार पर किया जाए।
5. क्षेत्रीय इतिहास, लोकस्मृतियों तथा मौखिक परम्पराओं के दस्तावेजीकरण को प्रोत्साहित किया जाए।
6. इतिहासलेखन में अंतर्विषयक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए।
7. भारतीय इतिहासलेखन को वैचारिक ध्रुवीकरण से मुक्त रखते हुए स्रोत-आधारित, आलोचनात्मक एवं संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाए।
8. भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित शोध के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाओं को प्रोत्साहन दिया जाए।

**उपसंहार-** भारतीय इतिहासलेखन का अध्ययन केवल अतीत को जानने का माध्यम नहीं है, बल्कि वर्तमान की बौद्धिक समझ और भविष्य के अनुसंधान की दिशा भी निर्धारित करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा की शक्ति उसकी समावेशी, बहुलतावादी और सतत् विकसित होने वाली प्रकृति में निहित है। इतिहासलेखन का उद्देश्य किसी एक विचारधारा की स्थापना नहीं, बल्कि उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर अतीत की यथासंभव संतुलित एवं प्रामाणिक व्याख्या करना है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय इतिहासलेखन को परम्परा और आधुनिकता के द्वंद्व में न देखकर संवाद के रूप में समझा जाए। भारतीय ज्ञान परम्परा का समकालीन पुनर्पाठ तभी सार्थक होगा जब वह वैज्ञानिकता, स्रोत-समालोचना, अकादमिक निष्पक्षता और अंतर्विषयक अनुसंधान के सिद्धान्तों पर आधारित हो। इसी संतुलित दृष्टिकोण से भारतीय इतिहासलेखन न केवल राष्ट्रीय बल्कि वैश्विक इतिहास-विमर्श में भी अपना विशिष्ट स्थान सुदृढ़ कर सकेगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. Basham, A. L. (Ed.). (1975). *A cultural history of India*. Oxford University Press.
2. Basham, A. L. (2004). *The wonder that was India*. Picador India.
3. Chattopadhyaya, B. D. (2009). *Studying early India: Archaeology, texts and historical issues*. Permanent Black.
4. Guha, R. (1982). *Subaltern studies I: Writings on South Asian history and society*. Oxford University Press.
5. Habib, I. (2005). *Medieval India: The study of a civilization*. National Book Trust.
6. KalhaGa. (1969). *RâjataraEgiGî* (M. A. Stein, Trans.). Motilal Banarsidass. (Original work composed c. 1148–1150 CE)
7. Kangle, R. P. (Trans.). (1965). *The KaumilîyaArthaúâstra* (Vols. 1–3). University of Bombay.
8. Kane, P. V. (1930–1962). *History of Dharmaúâstra* (Vols. 1–5). Bhandarkar Oriental Research Institute.
9. Kapoor, K., & Singh, A. K. (Eds.). (2005). *Indian knowledge systems*. D.K. Printworld.
10. Kosambi, D. D. (2002). *An introduction to the study of Indian history*. Popular Prakashan. (Original work published 1956)
11. Mahadevan, B., Bhat, V. R., & Pavana, N. (2022). *Introduction to Indian knowledge system: Concepts and applications*. PHI Learning.
12. Majumdar, R. C. (Ed.). (1951–1977). *The history and culture of the Indian people* (Vols. 1–11). Bharatiya Vidya Bhavan.
13. Majumdar, R. C. (1977). *Historiography in modern India*. Asia Publishing House.
14. National Education Policy. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
15. Nilakanta Sastri, K. A. (1958). *A history of South India* (2nd ed.). Oxford University Press.
16. Pande, G. C. (1990). *Foundations of Indian culture*. Motilal Banarsidass.
17. Raychaudhuri, H. C. (1996). *Political history of ancient India*. Oxford University Press.

18. Sarkar, J. (1952). *History of Aurangzib* (Vols. 1–5). Orient Longman.
19. Sharma, R. S. (1983). *Material culture and social formations in ancient India*. Macmillan.
20. Sharma, R. S. (2005). *India's ancient past*. Oxford University Press.
21. Singh, U. (2008). *A history of ancient and early medieval India*. Pearson.
22. Thapar, R. (2002). *Early India: From the origins to AD 1300*. University of California Press.
23. Thapar, R. (2013). *The past before us: Historical traditions of early North India*. Harvard University Press.
24. UNESCO. (2021). *Reimagining our futures together: A new social contract for education*. UNESCO.
25. Wheeler, R. E. M. (1959). *Early India and Pakistan*. Thames & Hudson.

**********